दूसरा तीमुथियुस

मसीही विश्वासियों के लिए "दूसरा तीमुथियुस" नामक बाइबॅल-पुस्तक का एक अध्ययन

DOOSARA TEEMUTHIYUS

First Hindi Edition **: June-2009**

Translated into Hindi by	:	**J.P. Pandey**
Assisted by	:	**R.K. Khullar**

Originally published in English by the Fellowship Bible Church, 3217, Middle Road, Winchester, VA. 22602 (U.S.A.), with the title "Lessons in Second Timothy for Growing Believers", edited by Scott and Tim Mcmanigle, and the same is based on the New Tribes Mission's method of chronologically teaching the scripture.

Copyright © The Fellowship Bible Church, Winchester, VA. (U.S.A.). All rights reserved.

विषय सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
एक	5—11
दो	12—23
तीन	24—28
चार	29—33

दूसरा तीमुथियुस

नामक

बाइबॅल–पुस्तक का एक संक्षिप्त अध्ययन

एक

संत पौलुस ने दूसरा तीमुथियुस नामक पत्री तब लिखी जबकि वह दुबारा कैद में डाल दिया गया था। उसने अपने मृत्यु–दंड से पूर्व अपना यह पत्र तीमुथियुस नामक व्यक्ति के नाम लिखा था, जो उस समय इफिसुस में था। इस पत्री में पौलुस ने तीमुथियुस को, प्रभु के प्रति तथा प्रभु की ओर से प्रदान की गई सेवकाई के प्रति, विष्वसनीय बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

"पौलुस की ओर से जो परमेष्वर की इच्छा से मसीह यीषु का प्रेरित है, अर्थात् उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीषु में है, मेरे प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम : पिता परमेष्वर और हमारे प्रभु मसीह यीषु की ओर से तुझे अनुग्रह, दया और शांति मिले" (दू0तीमु0 1:1–2)। पौलुस के लिए तीमुथियुस एक घनिष्ठ, विशिष्ट एवं प्रिय (विश्वासी) जन था। तीमुथियुस के लिए पौलुस आत्मिक पिता समान था, और उसके साथ आध्यात्मिक उन्नति करते हुए तीमुथियुस, सुसमाचार सेवा में, पौलुस का सहयात्री एवं सहकर्मी हो गया था। रोचक है कि पौलुस ने अपना अंतिम लिखित विचार एवं निर्देश तीमुथियुस को सौंपा। अपनी इस पत्री के शुरू में ही पौलुस ने इस सच्चाई को पेश किया कि अनुग्रह, दया और शांति सिर्फ पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह द्वारा ही उपलब्ध है, किसी मानवीय कर्म या उपलब्धि द्वारा नहीं।

"मैं अपनी प्रार्थनाओं में रात–दिन निरन्तर तुझे स्मरण करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं, जिसकी सेवा मैं अपने पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूं। तेरे आंसुओं का स्मरण कर–कर के मेरी तीव्र इच्छा होती है कि तुझ से भेंट करूं और आनन्द से भर जाऊं। मैं तेरे निष्कपट विश्वास को भी स्मरण करता हूं, जो पहिले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में विद्यमान था, और मुझे निश्चय है कि वह तुझ में भी है" (दू0तीमु0 1:3–5)। पौलुस तीमुथियुस से प्रेम रखता था और उसका ख्याल करता था। तीमुथियुस के (आध्यात्मिक) जीवन एवं भलाई के लिए वह निरन्तर प्रभु परमेश्वर पर आशा–भरोसा रखता था। पौलुस को तीमुथियुस के आंसू भी याद थे – संभवतः पौलुस के कारावास एवं दंडादेश से दुखित होकर बहाए गये आंसू, या फिर उनकी अंतिम मुलाकात के समय बहाए गये आंसू। बेशक, पौलुस उससे पुनः मिलने का आकांक्षी था। पौलुस यह भी लिखता है कि उसे तीमुथियुस का विश्वास भी याद आता था। पौलुस ने अन्य लोगों के विश्वास को भी स्मरण किया (कुलु0 1:4; इफि0 1:15; रोमि0 1:8)। तीमुथियुस परमेश्वर की सामर्थ्य, बुद्धिमत्ता एवं भलाई पर पूरे विश्वास के साथ आशा–भरोसा रखने वाला व्यक्ति था। इसके विपरीत शारीरिकता के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर हम अपने ऊपर ज्यादा भरोसा करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रभु परमेश्वर एवं उसके स्वभाव के बारे में हमारी सोच–समझ धुंधली (अस्पष्ट) हो जाती है। ऐसी दशा में विश्वासीजन परमेश्वर की सर्वसत्ता, सर्वोच्चता

एवं उसकी भलाईयों को स्मरण रखने के बजाय अपनी परिस्थितियों के प्रति स्वार्थ–सिद्धि के दृष्टिकोण से व्यवहार करता है। तीमुथियुस को अपनी माता एवं नानी से भी 'विश्वास के सहारे परमेश्वर पर आशा–भरोसा रख कर जीवन व्यतीत करने' का उदाहरण मिला था।

"इसी कारण मैं तुझे स्मरण दिलाता हूं कि परमेश्वर के उस वरदान को प्रज्ज्वलित कर दे जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे प्राप्त हुआ है। परमेश्वर ने हमें भीरुता का नहीं, परन्तु सामर्थ्य, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है" (दू0तीमु0 1:6–7)। परमेश्वर पर आशा–भरोसा रखते हुए विश्वास–विश्रान्ति का जीवन व्यतीत करने की योग्यता तीमुथियुस के लिए परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रहपूर्ण वरदान था। आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करते हुए तीमुथियुस ने जैसे–जैसे पौलुस की शिक्षा व संगति से, तथा अपने आप भी अध्ययन करते हुए, आध्यात्मिक सच्चाईयों पर ध्यान दिया; वैसे–वैसे परमेश्वर पर उसका आशा, भरोसा एवं विश्वास बढ़ता गया (रोमि0 1:7)। इसी प्रकार, मसीह द्वारा पूर्ण किए गये उद्धार–कार्य पर आशा–भरोसा रखते हुए, हम जितना अधिक आत्मा की अधीनता में चलेंगे, उतना ही अधिक प्रभु परमेश्वर पर आशा–भरोसा करेंगे। लेकिन शारीरिकता की अधीनता में जीने पर हम सिर्फ अपने अहं पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे और परमेश्वर पर तथा हमारे जीवन के लिए उसके उद्देश्यों पर दृष्टि नहीं लगाएंगे। हमें परमेश्वर की ओर से, भय व चिन्ता से बोझिल होकर, पीछे मुड़ने की आत्मा

नहीं मिली है। हम तो परमेश्वर की महिमा हेतु मसीह की देह का निर्माण करने के लिए (ख्रीष्त–जीवन द्वारा) सामर्थ्य और आध्यात्मिक वरदान से विभूषित किए गये हैं (इफि0 4:11–12)।

"अतः तू न हमारे प्रभु की साक्षी देने से, न मुझ से, जो उसका बन्दी हूं, लज्जित हो; परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा" (दू0तीमु0 1:8)। मसीही विश्वासी होने के कारण हमारे ऊपर उत्पीड़न एवं दुःख–क्लेश आना कोई अनहोनी बात नहीं है। आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर वह (पवित्र आत्मा) हमें धैर्य एवं आनन्दपूर्वक समस्त सतावट एवं दुःख–दर्द सहने की सामर्थ्य प्रदान करता है" (कुलु0 1:11)। लेकिन शारीरिकता के अनुसार चलने पर हम हताश व निराश होते हैं, भटकने लगते हैं, या फिर परिस्थितियों से समझौता करने लगते हैं। क्यों? क्योंकि शारीरिकता सुख–विलास एवं स्वयं की सुरक्षा (आत्म–परिरक्षण) चाहती है।

"जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ, परन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ है, जिसने मृत्यु का नाश किया और सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता पर प्रकाश डाला" (दू0तीमु0 1:9–10)। पौलुस

ने सुस्पष्ट कर दिया है कि 'सब कुछ परमेश्वर की देन है'। प्रभु परमेश्वर ने ही हमें उद्धार प्रदान किया, उसी ने अपने उद्देश्य–योजना के अनुसार हमें बुलाया है; और यह सब उसके अनुग्रह से है, न कि हमारे कर्म से। उसने हमें कब बुलाया? जगत की उत्पत्ति से पहले। इससे सुस्पष्ट है कि परमेश्वर द्वारा हमारी बुलाहट पूर्णतः उसके अनुग्रह की देन है। इसका हमारे किसी कर्म–प्रयास से कुछ भी लेना–देना नहीं है। हमें बुलाने के पीछे परमेश्वर का क्या उद्देश्य है? ख्रीष्तीय जीवन द्वारा प्रभु परमेश्वर की महिमा एवं आदर–मान अर्थात् पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करते हुए विश्वासीजन के जीवन–आचरण द्वारा ख्रीष्त–स्वभाव का प्रकटीकरण (दू0पत0 3:18; रोमि0 8:28–29)। इस प्रकार एक (उद्धार–प्राप्त) पापी द्वारा ख्रीष्त के जीवन–स्वभाव का प्रकटीकरण एक सच्चा आश्चर्य–कर्म है — (पाप में) मरी हुई चीज (जिन्दगी) में नवजीवन का संचार। ऐसा आश्चर्यकर्म परमेश्वर के अनुग्रह की महान साक्षी देता है।

"इसी के लिए मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक नियुक्त किया गया। और इसी कारण मैं ये सब दुख भी उठाता हूं, फिर भी मैं लज्जित नहीं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे पूर्ण निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की रखवाली करने में उस दिन तक समर्थ है" (दू0तीमु0 1:11–12)। तीमुथियुस को पौलुस ने साफ–साफ लिखा कि प्रभु परमेश्वर ने उसे ग़ैरयहूदियों को वह सब चीजें देने (सुनाने–समझाने) के लिए बुलाया है जो

उसे मुफ्त में प्रदान की गई हैं। इसी प्रकार पवित्र आत्मा द्वारा सत्य के ज्ञान–पहचान में विश्वासीजन की अगुवाई उसकी भलाई एवं परमेश्वर के महिमार्थ होती है, तथा इसके अलावा दूसरों तक पहुंचाने हेतु भी। पौलुस आगे लिखता है कि दूसरों को सत्य का संदेश देने के लिए उसे ईश्वरीय बुलाहट मिली है; अतएव उसे अत्याचार एवं अन्याय सहना पड़ रहा है (प्रेरि0 9:23,29; 13:45,50; 14:2,18; 16:22–24; 17:5,13; 18:6,12; 20:3,19; 21:27,30; 22:22; 23:12; 25:7)। प्रभु यीशु का प्रचार करने के कारण उसे अक्सर उत्पीड़न सहना पड़ा; लेकिन इससे वह लज्जित नहीं हुआ, क्योंकि उसे पूरा भरोसा था कि उसकी आशा स्वर्ग में (केन्द्रित व) सुरक्षित है। यहां पौलुस की अटल आशा व विश्वास भरे शब्दों पर ध्यान दें : "मैं जानता हूं कि मैंने किस पर विश्वास किया है"। हमारे जीवन में आनन्द एवं शांति का सच्चा आधार–स्रोत 'मसीह में हमारी आत्मिक **आशा**' ही है।

"जो खरे वचन तू ने मुझ से सुने हैं, उनको उस विश्वास और प्रेम में, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाए रख। पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हम में निवास करता है, उस उत्तम धरोहर की रखवाली कर। तू जानता है कि वे सब जो एशिया में हैं, मुझ से विमुख हो गए हैं, जिनमें फुगिलुस और हिरमुगिनेस हैं" (दू0तीमु0 1:13–15)। पौलुस ने तीमुथियुस को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वासपूर्वक पवित्र आत्मा पर यह भरोसा रखे कि जो सत्य उसे मिला है, उसको वह (पवित्र

आत्मा) सुरक्षित रखेगा। अपनी कठिनाईयों एवं संघर्षों के मध्य सत्य पर स्थिर रहना और उसके अनुसार आचरण करना कैसे संभव है? यह तभी संभव है जबकि हम मसीह के साथ अपने पुराने मनुष्यत्व के सह–क्रूसित होने की आध्यात्मिक सच्चाई पर विश्वास–विश्राम करते हुए पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन बिताते हैं। शारीरिकता के अनुसार जीवन जीने वाले लोग सुसमाचार से लज्जित होते हैं और उन कठिनाईयों एवं दुःखों को सहने से दूर भागते हैं जिनका परमेश्वर के लोगों को इस ख्रीष्त–विरोधी संसार में सामना करना पड़ता है। शारीरिकता में चलने वाला क्रिश्चियन जन अविश्वास के सहारे जीवन व्यतीत करता है; क्योंकि शारीरिकता विश्वास के सहारे जीवन व्यतीत नहीं करती।

"उनेसिफुरुस के कुटुम्ब पर प्रभु की कृपा हो, क्योंकि उसने बहुधा मुझे प्रोत्साहित किया है, और मेरी जंजीरों से लज्जित नहीं हुआ। इसके विपरीत, जब वह रोम आया तो उसने बड़े यत्न से ढूंढ़कर मुझ से भेंट की – प्रभु करे कि उस दिन उसे प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो – ओर जो–जो सेवाएं उसने इफिसुस में की हैं, उन्हें तू भली–भांति जानता है" (दू0तीमु0 1:16–18)। उनेसिफुरुस को पौलुस ने बड़े स्नेह के साथ स्मरण किया जिसने उसकी प्रेमपूर्ण सेवा–सहायता की थी।

दो

"इसलिए, हे मेरे पुत्र, उस अनुग्रह में जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो" (दू0तीमु0 2:1)। प्रभु परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अनमोल आशिषों की याद दिलाने के बाद पौलुस ने तीमुथियुस को "उस अनुग्रह में, जो मसीह यीशु में है, बलवन्त" होने के लिए प्रोत्साहित किया। अर्थात् "मसीह में" अपनी आत्मिक स्थापना (अधिकार) में स्थिर रहते हुए उन तमाम आशिषों द्वारा आन्तरिक तौर पर बलिष्ठ व प्रोत्साहित होना जिनके हम लायक नहीं थे।

शारीरिकता में हम अपने पैसे, प्रतिष्ठा और धन–सम्पत्ति से प्रोत्साहित होते हैं; तथा मसीह में प्राप्त आशा की अनदेखी करते हैं। इसके विपरीत, आत्मा के चलाए चलने पर हमारा मन मसीह में लवलीन रहता है, और संसारिक धन–सम्पत्ति एवं मान–सम्मान केन्द्रित चिन्ता का गुलाम नहीं होता। ऐसे (आत्मिक) जन का भरोसा मसीह में प्राप्त (आत्मिक) आशिषों पर केन्द्रित रहता है, अतएव उसे इहलौकिक परिस्थितियां नियंत्रित नहीं करतीं। हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही सुदृढ़ एवं बलवन्त हो सकते हैं।

"जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों" (दू0तीमु0 2:2)। संत

पौलुस जानता था कि तीमुथियुस को सतावट सहनी होगी और उसकी शिक्षा का विरोध होगा। इसीलिए उसने तीमुथियुस को उस अनुग्रह में बलवन्त होने के लिए प्रोत्साहित किया जो सिर्फ मसीह यीशु में ही उपलब्ध है। इसके बाद, तीमुथियुस से पौलुस ने यह कहा कि जो सत्य उसे मिला है उसको ऐसे विश्वस्त मनुष्यों को सौंप दे जो उस सत्य को मानने के अतिरिक्त दूसरों को भी बताएंगे (बाटेंगे)। कई लोग सत्य का तिरस्कार करते हैं और मसीहियों की हंसी उड़ाते हैं। अतः पौलुस ने तीमुथियुस को प्रभु के अनुग्रह में बलवन्त होने के लिए, और सत्य की भूख–प्यास रखने वाले, सीखने के इच्छुक तथा विश्वसनीय मनुष्यों की सत्य–शिक्षा में अगुवाई करने के लिए प्रोत्साहित किया।

"मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा। कोई भी योद्धा जो लड़ाई पर जाता है अपने आप को प्रतिदिन की झंझटों में इसलिए नहीं फंसाता कि वह अपने भरती करने वाले को प्रसन्न करे" (दू0तीमु0 2:3–4)। युद्ध में जाने वाली सेना को जब कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, तब अच्छे सैनिक कठिनाईयों को सहन करते हैं। यहां स्मरणीय बात यह है कि हम अपनी शारीरिकता में अपने आपे (अंह या स्वार्थ) की संरक्षा करते हैं और कठिनाईयों से बचना चाहते हैं। परन्तु आत्मा के साथ जीवन व्यतीत करने वाले लोगों का ध्यान–मन अपने आपे (स्वार्थ या अंह) पर नहीं बल्कि मसीह पर एवं उसकी बुलाहट के कार्योद्देश्य पर केन्द्रित

रहता है। अतएव कठिनाईयों की मात्रा अप्रासंगिक व अमहत्वपूर्ण हो जाती है।

चौथे पद में अच्छे योद्धा की एक अन्य विशेषता बताई गयी है : "अपने आप को प्रतिदिन के झंझटों में नहीं फंसाता"। युद्ध क्षेत्र में सेवारत सैनिक में एकनिष्ठा, उद्देश्यानुरक्ति या सच्ची लगन पायी जाती है। मसीही विश्वासियों से भी यही अपेक्षा की जाती है – प्रभु यीशु मसीह में लवलीन रहना, अर्थात् प्रभु परमेश्वर पर आशा, भरोसा एवं विश्वास–विश्राम करना। जब हम पवित्र आत्मा के चलाए चलते हैं, तब हमारा जीवन ऐसा ही होता है। शरीर के अनुसार जीवन बिताने पर हमारा ध्यान–मन मसीह के बजाए अन्य चीजों पर केन्द्रित होगा। कठिनाईयां सहन करने वाले तथा रोज की झंझटों से स्वयं को दूर रखने वाले अच्छे सैनिक की प्रेरणा के स्रोत (कारण) को भी पौलुस ने बताया – प्रभु परमेश्वर अर्थात् अपने बुलाने वाले या भर्ती करने वाले को प्रसन्न करने की तमन्ना।

"इसी प्रकार जब अखाड़े में जाने वाला पहलवान यदि विधि के अनुसार न लड़े तो वह पुरस्कार नहीं पाता। परिश्रमी किसान को ही सब से पहिले उपज का भाग मिलना चाहिए" (दू0तीमु0 2:5–6)। इसके बाद, पौलुस ने मसीही जीवन की तुलना एक खिलाड़ी (पहलवान) से की है। कोई खिलाड़ी खेल के नियमानुसार ही प्रतियोगिता में खेलने पर पुरस्कार जीत सकता है। मसीही जीवन का 'नियम' (तौर–तरीका) क्या है? कुलुस्सियों की पत्री के

दूसरे अध्याय के छठवें पद पर ध्यान दें : "जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु मानकर ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसमें चलते रहो"। उसको हमने कैसे ग्रहण किया? *विश्वास द्वारा* (परमेश्वर के) अनुग्रह से। ख्रीष्तीय जीवन जीने का तरीका भी यही है – *विश्वास के सहारे* (परमेश्वर के) अनुग्रह द्वारा (रोमि0 5:1–2)।

इसके बाद ख्रीष्तीय जीवन की तुलना एक किसान से की गई है। एक परिश्रमी किसान ही अपनी कठिन मेहनत के फल का लाभ (आनन्द) उठाता है। जैसे किसान अपने परिश्रम का फल पाता है, उसी प्रकार (पवित्र) आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करने वाला विश्वासी भी आत्मा के फलों से विभूषित होता है (गला0 5:22–23)।

"जो मैं कहता हूं उस पर ध्यान दे, क्योंकि प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा" (दू0तीमु0 2:7)। पौलुस ने तीमुथियुस को उन सब बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए कहा जो उसे पौलुस से प्राप्त हुयी थीं। हमें भी ख्रीष्तीय जीवन (मसीह तुम में – कुलु0 1:27) की गम्भीरता पर ध्यान देना जरूरी है। मसीही जीवन के महत्व की गम्भीरता को नहीं पहचानने पर विश्वासीजन इस संसार की चीजों में ही उलझा (फंसा) रहता है और परमेश्वर को नापसन्द जीवन जीता है तथा आत्मा के फल का अनुभव नहीं पाता।

"मेरे सुसमाचार के अनुसार दाऊद के वंशज मृतकों में से जी उठे यीशु मसीह को स्मरण रख" (दू0तीमु0 2:8)।

पौलुस ने तीमुथियुस को यह समझाया कि उसे इस सच्चाई को सदैव ध्यान में रखना है कि मसीह यीशु मृतकों में से जीवित हो उठा है; और उसे अपना ध्यान–मन जीवित प्रभु यीशु पर ही केन्द्रित रखना चाहिए। क्यों? इस धरती पर चलने–फिरने वाले मसीह यीशु अथवा क्रूसित मसीह यीशु की अपेक्षा मृतकों में से पुनः जीवित हो उठे मसीह यीशु का क्या खास महत्व है? मसीह यीशु का पुनः जीवित होना इस सच्चाई का प्रमाण है कि हमारे समस्त पापों का दंड–मूल्य चुकता किया जा चुका है और परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप (सम्बन्ध पुर्नस्थापित) किया जा चुका है। यदि मसीह यीशु द्वारा पूर्ण किए गये उद्धार–कार्य से पिता परमेश्वर संतुष्ट नहीं होता तो वह (मसीह) अपनी कब्र में ही पड़ा रहता। अतः मसीह के पुनः जीवित हो उठने तथा उसके द्वारा पूर्ण किए गये कार्य से परमेश्वर की संतुष्टि के परिणाम एवं मायने–मतलब पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है :– अनन्त दंड से हमारा बचाया जाना; परमेश्वर की संतान बनाया जाना; मसीह के साथ सह–उत्तराधिकारी; हमारे वास्ते पुनरुत्थान–प्रदत्त नव जीवन एवं नया स्वभाव।

"इसी सुसमाचार के लिए मैं दुख उठाता हूं, यहां तक कि अपराधी की भांति बन्धनों में हूं, परन्तु परमेश्वर का वचन किसी बन्धन में नहीं है। इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सह लेता हूं, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है, और उसके साथ अनन्त महिमा को प्राप्त करें" (दू0तीमु0 2:9–10)। परमेश्वर के वचन की सत्यता ने पौलुस को उत्पीड़न और कारावास सहने की

प्रेरणा दी। वह कहता है कि सुसमाचार के कारण उसे कैद (बंदीगृह) में डाल दिया गया था, लेकिन परमेश्वर का वचन किसी प्रकार के बंधन में नहीं था और न ही बाधित था। इसी प्रकार, प्रत्येक परिस्थिति में, जब हम मसीह के साथ अपनी एकता (पहचान) में विश्वास के सहारे परमेश्वर पर भरोसा करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं, तब हमारे जीवन में परमेश्वर का वचन अबाधित तौर पर कार्य करता है तथा आत्मा के फल उत्पन्न होते हैं। पौलुस कहता है कि सुसमाचार सम्बन्धी तथ्य इतने अद्‌भुत व सच्चे हैं कि वह इसके लिए कुछ भी सहने को तैयार था, ताकि अन्य तमाम लोग सुसमाचार को जानें और विश्वास करें। शरीर के अनुसार जीने पर हम अपनी संरक्षा व स्वार्थ–सिद्धि में लग जाते हैं। हां, शारीरिक जन भी सुसमाचार सुनाते हैं, लेकिन अपने स्वार्थ व कुछ लाभ के लिए। इसके विपरीत, आत्मा के अनुसार जीने वाला विश्वासी दूसरों के लिए खर्च करने एवं खर्च होने के लिए तत्पर रहता है (दू0कुरि0 12:15)।

"यह कथन विश्वसनीय है कि यदि हम उसके साथ मर चुके हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। यदि हम धीरज से सहें तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इनकार करें तो वह भी हमारा इनकार करेगा। यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता" (दू0तीमु0 2:11–13)। हम मसीह के साथ 'मर चुके' हैं, किन्तु उसके साथ पुनः जीवित भी किए गये हैं, ताकि एक नया जीवन

व्यतीत करें। हम पुराने आदम में से निकाल कर नये आदम (अर्थात् मसीह) में स्थापित किए जा चुके हैं। अब हम मसीह में एक नई सृष्टि हैं (दू0कुरि0 5:17)। परमेश्वर की दृष्टि में (सैद्धान्तिक या आध्यात्मिक दृष्टि से) अब हमारी यही आध्यात्मिक अवस्था है। जैसे–जैसे विश्वास द्वारा हम अपने इस आध्यात्मिक अधिकार–अवस्था को जानते, पहचानते और अपनाते जाते हैं वैसे–वैसे यह हमारे जीवन–अनुभव का अंग होता जाता है।

यदि हम विश्वास के सहारे जीवन व्यतीत करते हैं, और मसीह के अच्छे योद्धा समान कष्ट व कठिनाईयों को सहते हैं, तो मसीह के साथ राज करेंगे। इसके अतिरिक्त हमारे जीवन द्वारा उसका जीवन (स्वभाव), आत्मा का फल प्रकट होगा।

यदि हम विश्वास के सहारे जीवन व्यतीत करने के बजाय शारीरिकता में ही जीवन बिताते रहते हैं तो (परमेश्वर की ओर से) हमें अपने पापीपन (पाप–स्वभाव या पुराने स्वभाव) के परिणामों के (बुरे) अनुभव की छूट मिल जाती है (भज0 99:8)। बहरहाल, जब हम अविश्वास में तथा अपने पाप–स्वभाव के परिणामों के (बुरे) अनुभव में जीते हैं, तब भी प्रभु परमेश्वर हमारे प्रति विश्वस्त बना रहता है, और उसके अनुग्रह द्वारा जो कुछ (आत्मिक आशिष एवं अधिकार) हमें प्राप्त हुआ है, वह सब हमारा ही होता है, क्योंकि वह अपने वायदे (स्वभाव) से मुकर नहीं सकता। प्रभु यीशु द्वारा सम्पन्न उद्धार–कार्य सदा–सर्वदा

के लिए पर्याप्त है। हमारे लिए मसीह यीशु द्वारा पूर्ण किए गये कार्य को पिता परमेश्वर कभी अस्वीकार नहीं करेगा। अतः प्रभु परमेश्वर की ओर से मसीह के माध्यम से जो कुछ हमारा है, वह हमारा ही रहेगा। इसे कोई छीन नहीं सकता और न ही इसे बदला जा सकता है। हां, यह सम्भव है कि विश्वासीजन मसीह के साथ अपनी इस आत्मिक पहचान व एकता को जानने–मानने से इनकार करे और इसके फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों में परेशान रहे।

"उन्हें इन बातों का स्मरण दिला और परमेश्वर के सामने उनको चेतावनी दे कि शब्दों के बारे में तर्क–वितर्क न किया करें जो व्यर्थ है और सुननेवालों के लिए विनाश का करण है" (दू0तीमु0 2:14)। अतः विश्वासियों के लिए मसीह के साथ अपनी पहचान (एकता) सम्बन्धी सच्चाई को जानना और मानना बहुत आवश्यक है। इसके बजाय अन्य किसी बात पर आशा–भरोसा रखना 'शरीर के कामों' (ईर्षा–द्वेष, लड़ाई–झगड़े, क्रोध, बैर, दलबन्दी, फूट, मतभेद इत्यादि) की ओर बहकना है। जब हमें मसीह के साथ अपनी पहचान को जानने, मानने और अपनाने की शिक्षा मिलती है, तभी हम आत्मा के अनुसार जीवन बिताने तथा विश्वासियों की एकता में आगे बढ़ते हैं।

"अपने आपको परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जिस से लज्जित होना न पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाए" (दू0तीमु0 2:15)। तीमुथियुस को पौलुस ने प्रोत्साहित

किया कि वह अपने आपको परमेश्वर के लिए 'परीक्षा द्वारा जांचे–परखे हुए' एक अनुमोदनीय सेवक के समान प्रस्तुत करे। सुखद हालात में विश्वास के सहारे जिन्दगी बिताना आसान है; लेकिन कठिन परिस्थिति में हम क्या करते हैं? क्या दुर्दिन में भी हमारा हृदय प्रभु पर अटल दृष्टि लगाए रहता है? क्या कठिन हालात में भी मसीह के साथ हम अपनी आत्मिक पहचान रूपी सच्चाई पर विश्वास–विश्राम करते हैं? क्या ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी हम अपने प्रभु परमेश्वर की भलाई पर आशा–भरोसा रखते हैं? क्या अभाव की अवस्था में भी हम उसी में संतुष्ट रहते हैं? इसीलिए पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह एक ऐसे कार्यकर्ता के समान स्वयं को प्रस्तुत करे जिसे लज्जित होने की जरूरत नहीं। ऐसा सेवक परमेश्वर के वचन का सही अर्थ लगाता है, सही इस्तेमाल करता है और सही शिक्षा देता है।

"पर सांसारिक और व्यर्थ बकवाद से दूर रह, क्योंकि इससे लोग अभक्ति में और भी बढ़ते जाएंगे" (दू0तीमु0 2:16)। यदि कोई ख्रिश्चियन प्रभु यीशु मसीह के अलावा अन्य किसी चीज पर आशा–भरोसा रखने पर ध्यान लगाता है, तो वह शारीरिकता में जीवन व्यतीत करने पर मन लगाता है। ऐसे लोगों के (शारीरिक) कार्य–व्यवहार में सहभागी होना अभक्ति को बढ़ावा देना है (गला0 5:19–21)। जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है। शारीरिकता सिर्फ शारीरिकता को ही उत्पन्न करती है।

"और उनकी बातें सड़े घाव की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं : वे यह कहकर कि पुनरुत्थान पहिले ही हो चुका है सत्य से भटक गए हैं और कुछ लोगों के विश्वास को उलट–पुलट कर देते हैं" (दू0तीमु0 2:17–18)। शारीरिकता सदैव भ्रामक (झूठी) शिक्षा की ओर आकर्षित होगी। स्थानीय कलीसियाओं में भ्रामक शिक्षा को नहीं रोकना, मंडली रूपी देह में कैंसर समान भयावह रोग को दावत देना है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी मंडली के लोगों के मसीही विश्वास–सिद्धान्तों की सत्यता या गलती को जानने के लिए उनके ईमान की निरन्तर जांच–परख करते रहें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विश्वासियों को मसीही विश्वास के ज्ञान–समझ में बढ़ने तथा पवित्र आत्मा द्वारा परिपक्व बनाए जाने हेतु समय चाहिए। सत्य सम्बन्धी अपने झुंड के ज्ञान–समझ को जानना–पहचानना तथा उनकी आत्मिक समझ को विकसित करना कलीसिया के अगुवों की जिम्मेदारी है (नीति0 27:23)।

"फिर भी परमेश्वर की पक्की नींव अटल रहती है, जिस पर यह छाप लगी है, 'परमेश्वर अपने लोगों को पहचानता है' और, 'हर एक जो प्रभु का नाम लेता है, वह दुष्टता से बचा रहे'। बड़े घर में न केवल सोने व चांदी के, वरन् लकड़ी और मिट्टी के भी पात्र होते हैं, कुछ तो आदर के लिए और कुछ अनादर के लिए। अतः यदि कोई अपने को इन बातों से शुद्ध रखे तो वह आदर के योग्य, पवित्र, स्वामी के लिए उपयोगी और हर भले काम के लिए

तैयार किया हुआ पात्र होगा" (दू0तीमु0 2:19–21)। मसीह की देह अर्थात् कलीसिया के अनेक विश्वासी शरीर के अनुसार कम लेकिन आत्मा के अनुसार अधिक जीवन व्यतीत करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। ऐसे विश्वासी 'आदर के पात्र' हैं। ऐसे लोग मसीह के स्वभाव में बढ़ते हुए उसके लिए उपयोगी साबित होते हैं। बहरहाल, इनके अलावा कलीसियाओं में ऐसे विश्वासी भी हैं जो अपनी शारीरिकता के चलाए जीवन बिताते रहते हैं। ऐसे लोग 'अनादर के पात्र' होते हैं, क्योंकि ये लोग सिर्फ अपने स्वार्थ–सिद्धि के लिए शारीरिकता की अभिलाषाओं के अनुसार ही जीवन बिताते हैं।

"जवानी की अभिलाषाओं से भाग और जो लोग शुद्ध हृदय से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति का अनुसरण कर। परन्तु मूर्खता और अज्ञानतापूर्ण विवादों से यह जानकर अलग रह कि इन से झगड़े उत्पन्न होते हैं" (दू0तीमु0 2:22–23)। जवानी की अभिलाषाओं से दूर रहने हेतु मसीही विश्वासी की सच्ची आशा, विश्वास द्वारा मसीह के साथ सह–क्रूसित होने की सच्चाई को अपनाने, आत्मा की अगुवाई में जीने तथा आत्मा के फलों के प्रकटन में निहित है। मसीह के साथ हमारे (पुराने मनुष्यत्व के) सह–क्रूसित होने की सच्चाई को जानना, मानना और अपनाना ही हमें शारीरिकता के शासन एवं नियंत्रण से मुक्त करके धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति के जीवन में आगे बढ़ाता है।

"परमेश्वर के दास को झगड़ालू नहीं, वरन् सब पर दया करनेवाला, योग्य शिक्षक, सहनशील और विरोधियों को नम्रता से समझाने वाला होना चाहिए; क्या जाने परमेश्वर उन्हें पश्चाताप का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचाने, और सचेत होकर शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है" (दू0तीमु0 2:24–26)। यहां परमेश्वर के दास के गुणों पर ध्यान दें! परमेश्वर का दास झगड़ालू (हाथ–पांव मारते हुए संघर्षरत) नहीं, बल्कि प्रभु परमेश्वर पर आशा–भरोसा रखते हुए विश्वास–विश्राम के आधार पर जीवन व्यतीत करने वाला, सबके प्रति विनम्र, कोमल, सज्जन व दयालु; यहां तक कि उनके प्रति भी विनम्र होता है जो इसके लायक नहीं। शिक्षा देने में योग्य (निपुण) होना है। सबके प्रति धैर्यवान होना है। विरोध करने वालों को भी नम्रता व दीनता के साथ सिखाने–समझाने में योग्य होना है। सत्य के जरूरतमन्द लोगों की आंतरिक आंखें खोले जाने के लिए प्रभु परमेश्वर पर आशा–भरोसा रखने वाला होना है। परमेश्वर का सेवक यह जानता–समझता है कि सत्य का विरोध करने वाले लोग भ्रामक शक्तियों एवं शिक्षाओं (शैतान) के जाल (धोखे) में हैं। इसलिए परमेश्वर का जन ऐसे लोगों के विरोध को वैयक्तिक विरोध नहीं मानता।

तीन

"परन्तु ध्यान रख कि अंतिम दिनों में कठिन समय आएंगे" (दू0तीमु0 3:1)। इसके बाद पौलुस ने तीमुथियुस को आने वाले कठिन समय के बारे में चेतावनी दी। पिन्तेकुस्त के दिन अर्थात् कलीसिया प्रारम्भ होने से लेकर दूसरा तीमुथियुस नामक पत्री के लिखे जाने तक लगभग साठ साल बीत चुके थे। प्रेरितों की शिक्षा द्वारा कलीसिया शुद्ध, सही एवं सत्य–शिक्षा में सुदृढ़ की जा रही थी। परन्तु समय के साथ कलीसिया में शारीरिकता और स्व–तृप्ति को बढ़ावा मिला। इसके परिणामस्वरूप "कठिन समय" (संकटपूर्ण एवं खतरनाक समय) का आना अवश्यम्भावी था।

"क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, अहंकारी, उद्दण्ड, परमेश्वर की निन्दा करने वाले, माता–पिता की आज्ञा न मानने वाले, कृतघ्न, अपवित्र, स्नेहरहित, क्षमारहित, परनिन्दक, असंयमी, क्रूर, भलाई से घृणा करने वाले, विश्वासघाती, ढीठ, मिथ्याभिमानी, परमेश्वर से प्रेम करने की अपेक्षा सुख–विलास से प्रेम करने वाले होंगे। यद्यपि ये भक्ति का वेश तो धारण करते हैं, फिर भी उसकी शक्ति

को नहीं मानते : ऐसे लोगों से दूर रहना। क्योंकि इनमें वे लोग हैं जो घरों में दबे पांव घुस जाते हैं और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी और अनेक प्रकार की दुर्वासनाओं में फंसी हैं, जो सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुंच पातीं। जैसे यन्नेस और यम्ब्रेन्स ने मूसा का विरोध किया, वैसे ही ये लोग भी सत्य का विरोध करते हैं। ये ऐसे मनुष्य हैं जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। परन्तु अब वे और अधिक उन्नति नहीं कर सकते, क्योंकि जैसे उन दोनों की अज्ञानता सब पर प्रकट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी" (दू0तीमु0 3:2–9)। पौलुस ने यह कहा कि लोगों का शारीरिकता के अनुसार चलना भविष्य में "कठिन समय" लाएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस यहां सिर्फ अविश्वासियों की बात नहीं कर रहा था; बल्कि मंडली के शारीरिक विश्वासियों की भी बात कर रहा था। सत्य से दूर होने (बहकने) पर विश्वासी लोग आत्मा के अनुसार कम किन्तु शारीरिकता की अधीनता में अधिक जीते हैं। इसके नतीजतन शारीरिकता के कुप्रभाव में बुरे दिन (कठिन समय) ही आएंगे। पांचवें पद पर ध्यान दें! क्या इस पद की बातों में आज की मंडली की तस्वीर नहीं पायी जाती? "भक्ति का वेश तो धारण करते हैं, फिर भी उसकी शक्ति को नहीं मानते"।

ऐसा लगता है कि आज के तमाम मसीही आत्मा के अनुसार आचरण करने का सच्चा भावार्थ भूल बैठे हैं, और इस प्रकार परमेश्वर की सामर्थ्य का इनकार करते हैं। बहुत से मसीही क्रूस तथा मसीह के साथ हमारे (पुराने मनुष्यत्व के) सह–क्रूसित होने का कोई महत्व नहीं समझते।

"परन्तु तू ने मेरी शिक्षा, आचरण, अभिप्राय, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धैर्य, सतावों और दुखों में मेरा साथ दिया, जो अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर आए। कैसे–कैसे सताव मैंने सहे, परन्तु प्रभु ने उन सब से मुझे बचाया! और वास्तव में वे सब, जो मसीह यीशु में भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सताए जाएंगे" (दू0तीमु0 3:10–12)। बेशक, शारीरिकता में जीवन बिताने वाले विश्वासियों के कारण मंडली के लोगों के लिए "कठिन समय" आएंगे। लेकिन तीमुथियुस ने पौलुस के जीवन आचरण एवं उसकी शिक्षा को देखा था। अर्थात् उसके सेवा–कार्य, व्यवहार एवं शिक्षा के द्वारा पौलुस के आत्मा–संचालित जीवन को देखा था। अतः पौलुस ने तीमुथियुस को यह स्पष्ट बताया कि सच्ची ईश्वर–भक्ति का (मसीही) जीवन व्यतीत करने के इच्छुक लोगों को सतावट सहनी पड़ेगी। आत्मा के अधीन सच्ची ईश्वर–भक्ति का जीवन व्यतीत करने वाला जन, परमेश्वर के अनुग्रह से, विश्वास के सहारे अभक्ति और अत्याचार का दृढ़तापूर्वक

सामना करता है। यदि हम सचमुच आत्मा के अनुसार जीवन जी रहे हैं, तो धार्मिकता के वास्ते उत्पीड़न सहना असहनीय बोझ नहीं लगेगा (मत्ती 11:28–30)। इसके विपरीत, शरीर के अनुसार जीने वालों का प्रमुख लक्ष्य स्व–सुख, स्वार्थ–सिद्धि, अपनी सुरक्षा और अपना शुभ–लाभ ही होता है। ऐसे लोग अपने सुख, समृद्धि व स्वार्थ–सिद्धि के लिए हर प्रकार का समझौता करने को तैयार रहते हैं।

"परन्तु दुष्ट और छली तो धोखा देते और धोखा खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे" (दू0तीमु0 3:13)। अतः तीमुथियुस से पौलुस यह कहता है कि उसे छल, कपट, धोखा व दुष्टता की बढ़त से हैरान होने की जरूरत नहीं है। ऐसा होना अवश्यम्भावी है।

"परन्तु तू उन बातों पर जो तू ने सीखी हैं और जिनका तुझे निश्चय हुआ है, यह जानकर बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, और बचपन ही से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा तुझे उद्धार पाने के लिए बुद्धि दे सकता है" (दू0तीमु0 3:14–15)। इसके बाद पौलुस ने तीमुथियुस से यह कहा कि संसार में बढ़ती हुई दुष्टता व धोखेबाजी के बावजूद उसे उन बातों में लगे रहना है जिनकी सत्यता के बारे में वह भली–भांति आश्वस्त है। बुरे दिन होने के

बावजूद परमेश्वर का वचन आशा, ज्ञान–बुद्धि एवं छुटकारा प्रदान करता है; और बुराई व दुष्टता के मध्य हमारे हृदय को प्रभु पर स्थिर रखता है।

"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल व तत्पर हो जाए" (दू0तीमु0 3:16–17)। परमेश्वर का वचन परमेश्वर की प्रेरणा से प्रदान किया गया है। यह मानुषिक विचार–बुद्धि की देन नहीं है। अतः इस पर पूर्णरूपेण भरोसा किया जा सकता है, अर्थात् यह पूर्णतः विश्वसनीय है। परमेश्वर के वचन के ईश्वरीय उद्देश्य पर ध्यान दें – मनुष्य को सत्य का ज्ञान प्रदान करना, ताड़ना देना व सुधार करना, धार्मिकता की शिक्षा देना; ताकि परमेश्वर का जन परमेश्वर की इच्छानुसार परमेश्वर का कार्य करने योग्य (आत्मिक तौर पर परिपक्व) हो। इस प्रकार सत्य के ज्ञान–समझ में सुदृढ़ होकर, प्रभु के लोग, विभिन्न लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार सेवा–सहायता करने योग्य होते हैं। परमेश्वर के वचन के सत्य बगैर जीवन की समस्याओं का हमारे पास कोई सही व स्थायी समाधान नहीं है।

चार

"परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह जानकर जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेगा, और उसके प्रकट होने तथा उसके राज्य के नाम में मैं तुझे आज्ञा देता हूं" (दू0तीमु0 4:1–2)। पिछले अध्यायों में तीमुथियुस को सत्य एवं आशा की याद दिलाते हुए पौलुस ने इस चौथे अध्याय को 'परमेश्वर के वचन का प्रचार करते रहने' के प्रोत्साहन से शुरू किया है। हर समय, परमेश्वर का वचन सुनाने–समझाने के लिए, हमें तत्पर रहना है – चाहे ऐसा करना हमारे लिए सुविधाजनक हो या नहीं। मसीह के राजदूत (दू0कुरि0 5:20) समान हमें अनेक अवसर प्राप्त होते हैं जबकि लोगों को हम यह सिखा–समझा सकते हैं कि सत्य के अनुसार और सत्य के विपरीत जीवन क्या है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर का वचन शिक्षा, सुधार, डांट, समझाने व प्रोत्साहन द्वारा लोगों के जीवन को प्रभावित करता है।

पौलुस लिखता है कि दूसरों को सत्य की शिक्षा देते समय असीम धैर्य रखना जरूरी है। परमेश्वर के वचन की महत्ता तथा इसे सिखाने की परम आवश्यकता के प्रति बहुत से विश्वासी अगम्भीर दिखाई देते हैं। हां, दुनिया जिसे महत्वपूर्ण समझती है उन चीजों के बारे में सीखने–सिखाने के प्रति हम में से बहुतेरे लोग तत्परता और गम्भीरता

दिखाते हैं। बेशक, इन बातों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। परन्तु सत्य के ज्ञान व शिक्षा में विकसित होते रहने तथा मसीह के साथ गहरी संगति में बढ़ने–बढ़ाने की आवश्यकता एवं महत्व के प्रति जितनी तत्परता, जागरूकता व गम्भीरता होनी चाहिए, वह कहां दिखायी देती है! हम जितना अधिक विश्वास के सहारे जीवन व्यतीत करते हैं; उतना ही अधिक परमेश्वर के वचन के प्रति जागरूक, तत्पर व गम्भीर रहते हैं।

"क्योंकि समय आएगा जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपने कानों की खुजलाहट के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार ही अपने लिए बहुत से गुरू बटोर लेंगे। वे सत्य की ओर से अपने कानों को फेर लेंगे और कल्पित–कथाओं में मन लगाएंगे" (दू0तीमु0 4:3–4)। यहां पौलुस ने यह चेतावनी दी कि आने वाले समय में बहुत से मसीही सत्य–शिक्षा (या खरी शिक्षा) नहीं सुनना चाहेंगे। इसके बजाय वे ऐसे शिक्षकों को बटोर लेंगे जो उनके लिए मनचाही बातें सुनाएंगे। ऐसे लोग सत्य से विमुख होकर असत्य कथा–कहानियों पर मन लगाएंगे।

"परन्तु तू सब बातों में संयमी रह, कष्ट उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा पूरी कर" (दू0तीमु0 4:5)। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि अनेक लोगों द्वारा सत्य को त्यागने के बावजूद उसे संयमपूर्वक (सत्य पर) स्थिर रहना है और अडिग होकर हरेक कठिनाई को सहते रहना है। उसे सुसमाचार प्रचारक का कार्य करते रहना है, खोये हुओं के उद्धार के लिए प्रभु

परमेश्वर पर आशा–भरोसा रखना है, तथा सेवकाई सम्बन्धी समस्त दायित्व को पूरा करना है। इन सब बातों में झटपट सफलता के चक्कर में शारीरिकता के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले लोग शार्टकट तौर–तरीकों को अपनाने, सेवा–सहायता के जरूरतमन्दों से दूरी बनाए रखने, या फिर अधीरज की राह पर भटकने लगते हैं।

"क्योंकि अब मैं अर्घ की भांति उण्डेला जाता हूं और मेरे जीवन का अंतिम समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रक्षा की है। भविष्य में मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धार्मिकता से न्याय करने वाला है उस दिन मुझे प्रदान करेगा, और न केवल मुझे वरन् उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं" (दू0तीमु0 4:6–8)। वह दिन दूर नहीं जबकि पौलुस की तरह हमारी (मसीही) दौड़ समाप्त हो जाएगी। तत्पश्चात् हम परमेश्वर के समक्ष उपस्थित होंगे। तब हम या तो **आत्मा** के अनुसार जीवन व्यतीत करने एवं सेवा करने का पुरस्कार प्राप्त करेंगे, या फिर **शारीरिक** जीवन जीने के कारण ऐसे पुरस्कार से वंचित रह जाएंगे। स्मरण रहे कि कठिनाईयों, परीक्षाओं एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद पौलुस प्रभु के मार्ग पर बना रहा। आत्मा के अधीन जीता रहा, आत्मा के फल प्रकट करता रहा और जिस सेवा–कार्य के लिए प्रभु न उसे बुलाया व तैयार किया था उसके प्रति पूर्णतः समर्पित रहा (इफि0 2:10)। यहां पौलुस ने स्वर्ग में विश्वासियों को मिलने वाले पुरस्कार की ओर

संकेत किया है। विश्वास के द्वारा **आत्मा** के अधीन जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को "धार्मिकता का मुकुट" दिया जाएगा। "धार्मिकता के मुकुट" में सदा–सर्वदा के लिए शारीरिकता, पाप और इहलौकिक जीवन के दुखों से अलगाव तथा पूर्णरूपेण पवित्र एवं धर्मी संतान के रूप में सदा–सर्वदा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में रहना भी शामिल होगा (प0यूह0 3:2)।

"मेरे पास शीघ्र आने का पूरा प्रयत्न कर, क्योंकि देमास ने इस संसार के मोह में पड़कर मुझे छोड़ दिया और थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रैसकेंस तो गलातिया को और तीतुस, दलमतिया को चला गया है। केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को साथ लेते आना, क्योंकि सेवा–कार्य में वह मेरे लिए उपयोगी है। तुखिकुस को मैंने इफिसुस भेजा है। जब तू आए तो मेरा चोगा और पुस्तकें, विशेषकर चर्म–पत्र लेते आना जिन्हें मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया था। सिकन्दर ताम्रकार ने मुझे बहुत हानि पहुंचाई है। प्रभु उसके कार्यों के अनुसार उसे बदला देगा। तू भी उस से सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी शिक्षा का घोर विरोध किया है" (दू0तीमु0 4:9–15)। रोचक है कि यह परमेश्वर–भक्त अपने जीवन के आखिरी दिनों एवं वृद्धावस्था में भी परमेश्वर के वचन (चर्म–पत्र) को पाने व पढ़ने के लिए लालायित रहा।

"पहली बार मेरे पक्ष के समर्थन में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, परन्तु सब ने मुझे त्याग दिया था। काश, उनको इसका लेखा न देना पड़े! परन्तु प्रभु मेरे साथ खड़ा

हुआ और उसने मुझे सामर्थ दी कि सुसमाचार का मेरे द्वारा पूरा–पूरा प्रचार हो जिस से सब अन्यजातियां सुनें। मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया। प्रभु मुझे प्रत्येक दुष्कर्म से छुड़ाएगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित पहुंचाएगा। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन" (दू0तीमु0 4:16–18)। पौलुस ने अपने जीवन की साक्षी द्वारा तीमुथियुस को पुनः प्रोत्साहित किया कि प्रभु परमेश्वर ने उसके दुर्दिन में उन सब परेशानियों से उसे छुड़ाया जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं थीं। परमेश्वर सदैव विश्वासयोग्य है। हमारे जीवन में चाहे जैसी मुसीबत या बुरी परिस्थिति आए, प्रभु परमेश्वर अपने स्वर्गिक राज्य के लिए हमारी रक्षा करेगा।

"प्रिस्का और अक्विला को तथा उनेसिफुरुस के कुटुम्ब को नमस्कार कह। इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और मैं त्रुफिमुस को मीलेतुस में बीमार छोड़ आया हूं। जाड़ों से पहिले आने का पूरा प्रयत्न करना। यूबुलुस और पुदेंस, लिनुस, क्लौदिया और सब भाई तुझे नमस्कार कहते हैं। प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे। तुम पर अनुग्रह होता रहे" (दू0तीमु0 4:19–22)। इस पत्री में पौलुस के अंतिम शब्दों पर ध्यान दें : "तुम पर अनुग्रह होता रहे"। वह यह जानता था कि तीमुथियुस 'विश्वास और सत्य' से लैस था। अब वह सिर्फ "परमेश्वर के अनुग्रह" द्वारा ही इन सच्चाईयों में सुदृढ़, स्थिर, अटल एवं विश्वसनीय बना रह सकता था।

✞ ✞ ✞

इस श्रंखला की पुस्तकों का निम्नलिखित क्रम में अध्ययन ज्यादा लाभप्रद होगा :

1. परमेश्वर-कृत उद्धार
2. प्रेरितों के कार्य
3. वह मुझमें और मैं उसमें
4. रोमियों
5. इफिसियों
6. पहला कुरिन्थियों
7. पहला तीमुथियुस
8. तीतुस
9. पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों
10. प्रकाशितवाक्य
11. गलातियों
12. कुलुस्सियों
13. दूसरा कुरिन्थियों
14. फिलिप्पियों
15. फिलेमोन
16. दूसरा तीमुथियुस
17. पहला और दूसरा पतरस

इन पुस्तकों की और प्रतियां प्राप्त करने हेतु इन फोन नम्बरों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं :